श्री स्वरूप गोविन्द पारीक स्नातकोतर महाविद्यालय
SHREE SWAROOP GOVIND PAREEK VIDYALAYA

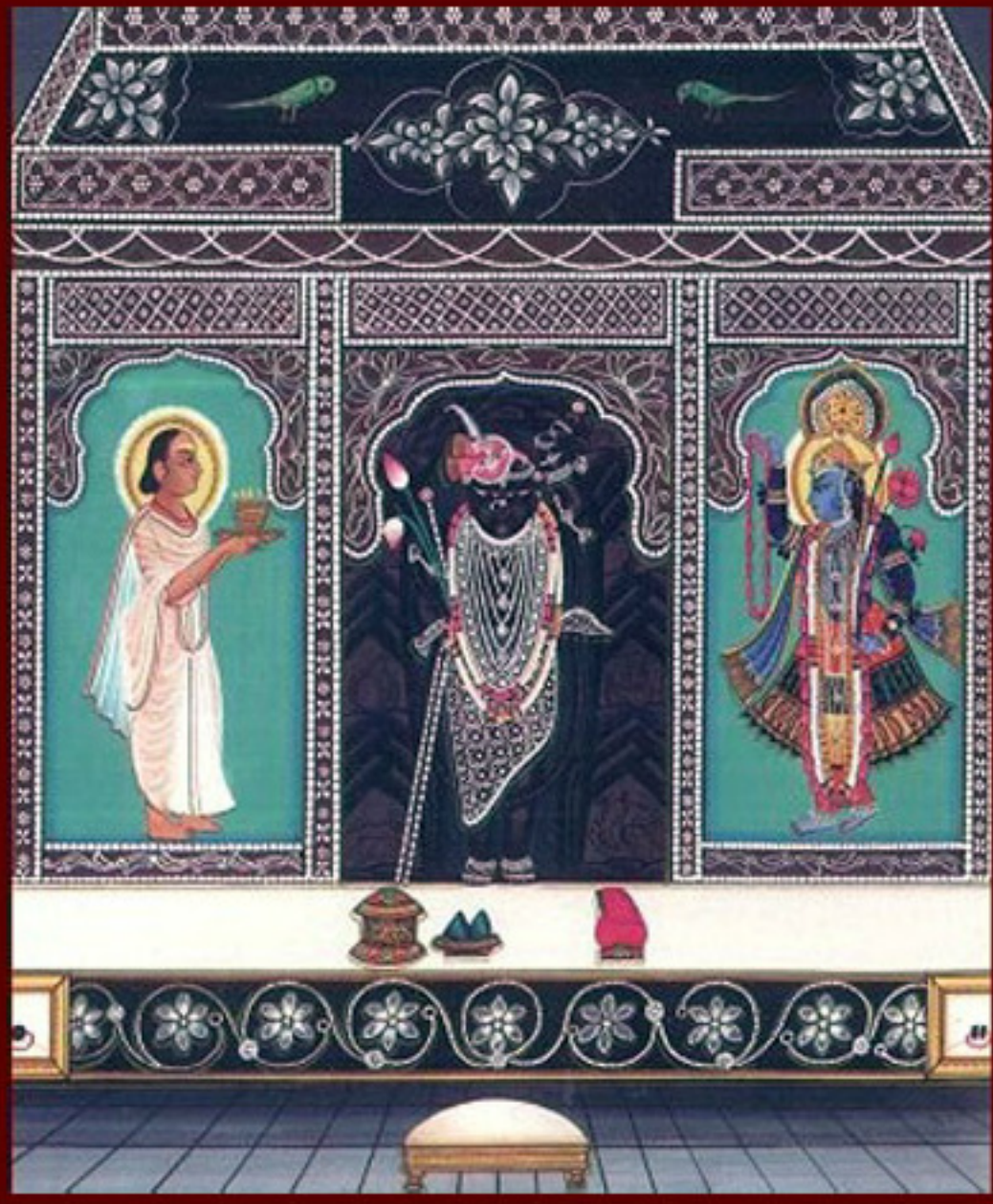

श्री स्वरूप गोविन्द पारीक
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
SHREE SWAROOP COVIND PAREEK VIDYALAYA

विजयते श्रीश्रीनाथः प्रभुः
इस "श्री स्वरूप-गोविन्द-पारीक-विद्यालय" का उद्घाटन, परमउदार
सज्जनवत्सल, श्रीमान् कैप्टेन, हिज़हाइनेस, सरमद राजहाय हिन्दुस्तान, राज-
राजेन्द्र, महाराजाधिराज, सर सवाई मानसिंहजी बहादुर जी.सी.आई.ई. ने
निज करकमलों से शुभामति चैत्रकृष्णा ५ भृगु, तदनुसार ता. १० मार्च सन् १९३६
को किया।
इसका शिलान्यास रायबहादुर पं. अमरनाथजी अटल एम्.ए. फाइनेन्स
तथा पब्लिक वर्क्स मिनिस्टर ने ता. १२ जून सन् १९३५ को किया।
इस भवन का निर्माण स्वर्गीय परम धर्मनिष्ठ, दानवीर, भगवद्भक्त तिवाड़ी
भूमरलालजी तथा स्वरूपनारायणजी के पुत्र तथा पौत्र तिवाड़ी गोविन्दनारायण तथा
कन्हैयालाल एम्.ए. विशारद ने सर्व साधारण में श्रेष्ठ शिक्षा के प्रचार के अभिप्राय
से कराया।
आशा है, इस ज्ञान-सुधा-सरोवर-विद्यालय में विविध प्रकार के छात्ररूपी हंस-
दि पक्षिगण अनन्त काल तक विद्यामृत पान कर परम अभ्युदय के भागी बनते
रहेंगे।
इस विद्यालय-भवन के निर्माण में रुपए ९५०००) व्यय हुए हैं जिसमें सम-
स्त भूमि तथा शिक्षा-विभाग के भवन निर्माण के नियमानुसार रुपए
श्री अन्नदाताजी ने प्रदान किए हैं।
सर्वे कुशलिनः सन्तु, सर्वे सन्तु निरामयाः ॥
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥१॥
॥शुभम्॥

भगवद भक्त दानवीर

तिवाड़ी झूमर लाल जी

ए ग्रेट फिलेन्थ्रोपिस्ट ऑफ जयपुर

भगवद् भक्त दानवीर

तिवाड़ी स्वरूप लाल जी

ए ग्रेट फिलेन्थ्रोपिस्ट ऑफ जयपुर

भगवद् भक्त दानवीर

तिवाड़ी गोविन्द नारायण जी

भगवद भक्त दानवीर

तिवाड़ी कन्हैया लाल जी

चटशाला के रूप में कॉलेज का प्रथम भवन

श्रीमान् तिवाड़ी बन्धुओं की हवेली वाले इसी भवन में वर्तमान कालेज ने चटशाला के रूप में जन्म लिया था।

हाईस्कूल का प्राचीन भवन

लाहरगढ़ की सड़क पर स्थित यह भवन भी श्री तिवाड़ी बन्धुओं द्वारा ही संस्था को प्रदान किया गया है। इसमें ता० १ मार्च, सन् १९३९ तक यह विद्यालय चलता रहा। आजकल इसमें मिडिल कक्षा तक के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। अब इसी भवन में पुनः हाईस्कूल की कक्षाओं के सुञ्चालन के लिए नये कक्ष बनवाये जा रहे हैं।

हमारे प्रिंसीपल

श्रीयुत पं० गोपाललालजी पुरोहित, एम. ए., बी. टी.,

इतिहास-विशेषज्ञ

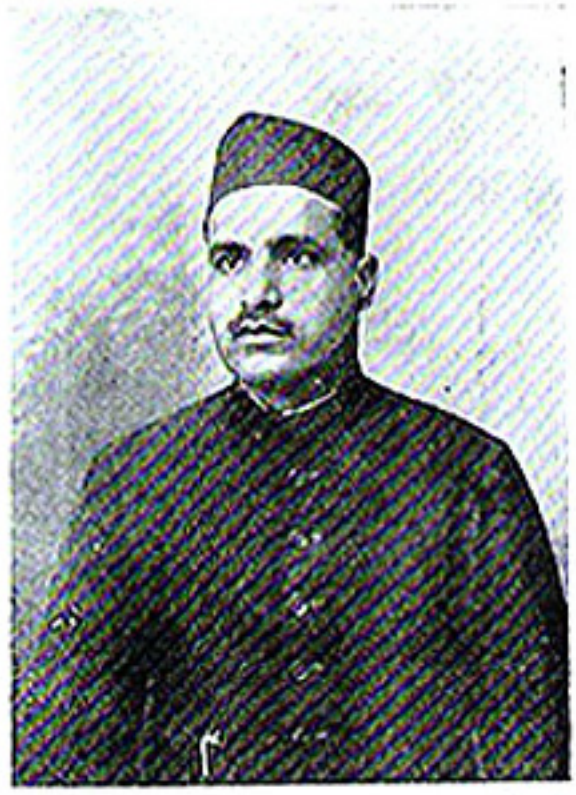

जयपुर के शिक्षा-शास्त्रियों में आपका स्पृहणीय सम्मान है। इतिहास शास्त्र के आप विशिष्ट विद्वान् समझे जाते हैं एवं प्रारंभ से ही आप रा.यू. विश्वविद्यालय के सिनेट के सदस्य भी हैं। गत २५ वर्षों से आप इस संस्था की सेवा में संलग्न हैं और वर्तमान में इसके प्रधान आचार्य हैं। आपके ही कार्यकाल में यह विद्यालय हाईस्कूल से डिग्री कॉलेज बना है। कॉलेज की यह सर्वतोऽभिमुखी अभ्युन्नति आपकी श्रमशालीनता की प्रतिभूति है। आपने अपने विशेष बंदुष्य, शासन-नैपुण्य एवं व्यवहार-शालीन्य से सभी को आवर्जित कर लिया है। इस संस्था को आप से अभी बहुत आशाएं हैं।

सर सवाई माधो सिंह जी - 2 बहादुर

सर सवाई मान सिंह जी बहादुर

❁ श्रीः ❁

प्राक्कथन

समाज या देश में व्यक्ति का मूल्यांकन उसके व्यक्तित्व पर ही अवलम्बित हुआ करता है। किसी भी महापुरुष का सान्निध्य हम उसके कर्तृत्वशिल्प के माध्यम के अभाव में कदापि प्राप्त नहीं कर सकते। सच तो यह है कि मानव का व्यक्तित्व ही उसके सद्व्यावहारिक कौशल को विकसित क्षेत्र में साकार प्रस्तुत करने की सम्यक् प्रेरणा प्राप्त करता है। किसी भी महापुरुष की वाणी का व्यापार अथवा उसकी विपुल धनराशि का सदुपयोग उसके कर्तृत्वशिल्प पर निर्भर रहता है और इसी के बल पर वह जनता के मनोमन्दिर में सम्मान उचित स्थान प्राप्त करके विश्व में अपने अक्षुण्ण पदचिह्नों को अंकित कर देता है। इस परिवर्तनशील संसार में यों तो अनेक व्यक्ति अपने आवागमन द्वारा सृष्टि की स्थिरता में सहयोग देते ही रहते हैं किन्तु कुछ व्यक्तिविशेष ऐसे भी होते हैं जो अपने विभिन्न कार्यों के द्वारा अपना व्यक्तित्व छोड़ जाया करते हैं और उनके वे ही कार्य अनन्तकाल तक उनके स्मृति-साधन बने रहते हैं।

कॉलेज के इस चित्रमय परिचय द्वारा हम ऐसे ही कतिपय महा महिमशाली महानुभावों की स्मृति-रेखायें प्रस्तुत कर रहे हैं जिन्होंने देश और समाज के अभ्युत्थान के हेतु इस के संवर्द्धन में पूर्ण सहयोग दिया है। साथ ही हमारे संरक्षक एवं भारत का वह महान् नेतृवर्ग भी भुलाया नहीं जा सकता, जिसने अपने आदर्श व्यक्तित्व के आधार पर स्वतन्त्रता के सुखद सुशासन का अनुभव कराकर हमें प्रगतिशील कार्यों में भाग लेने की क्षमता प्रदान की है।

इस संस्था का जन्म जयपुर के लोकप्रिय स्व० महाराजा सवाई माधवसिंहजी के शासन समय में हुआ था। उस समय सदानन्द-मूर्धन्य स्व० भूधरलालजी एवं स्व० रघुनन्दनलालजी तिवाड़ी ने अपनी हवेली पर शिशुओं की शिक्षा-दीक्षा की भावना से सिद्धान्त-वागीश पं० माधव प्रसादजी शास्त्री के द्वारा इस शुभ कार्य का श्री गणेश किया था। चटशाला के रूप में जन्म लेकर इस संस्था ने शीघ्र ही शिशु-संख्या की वृद्धि के कारण पाठशाला का रूप प्राप्त कर लिया। जिसके लिए श्री तिवाड़ी-बन्धुओं ने इस शुभ-सद्भावना की अनुवृत्ति से नाहरगढ़ की सड़क पर एक नया भवन बनवा कर ता० ३ जनवरी १९०६ को आर्थिक सहायता के प्रबन्ध के साथ इसे एक नियमित पाठशाला का रूप दे दिया।

स्वर्गीय तिवाड़ीजी की सत्प्रेरणा से तथा सज्जनीय सज्जनों के सहयोग से शुरू में पाठशाला में तृतीय-चतुर्थ कक्षाएँ खोली गई थीं। आठवें वर्ष के पश्चात् तत्कालीन जयपुर राज्य के शिक्षाध्यक्ष ने इसके संचालकों की लगन एवं प्रतिविधि से योग्यता पाकर इसमें अपर प्राइमरी की कक्षाएँ भी संचालित करवाईं, पुनः प्रगतिशील समय की बढ़ती हुई सीमा प्रसार करते करते इस संस्था की इच्छाविशेषता एवं कार्यकर्ताओं की कर्तव्य-निष्ठता तथा सफल परीक्षाफलों की विशेषता से प्रभावित होकर सातवीं-आठवीं कक्षाएँ चालू कर देने की भी स्वीकृति प्रदान करदी। इस अवधि के संचालन-व्यय का अधिकांश भार श्री तिवाड़ी-बन्धुओं पर ही रहा।

पारीक पाठशाला के उक्त कक्षाएं खुले विशेष समय समाप्त नहीं हुआ था कि "उत्साहं नर्यति दरश्चतापि योगः" के अनुसार जयपुर में 'पारीक हितकारिणी सभा' का विशेषाधिवेशन सम्पन्न हुआ। जिसमें इसे अविलम्ब हाईस्कूल बना देने का प्रस्ताव निर्विवाद स्वीकृत किया गया। पुनः समय की ईषत् समाप्ति के उपरान्त ही ता० ७ दिसम्बर सन् १९२४ को इस पाठशाला के १६ वें पारितोषिक वितरणोत्सव में सभापति पद पर विराजित तत्कालीन जयपुर राज्य के शिक्षा-मन्त्री रा० ब० श्री नरेन्द्रसिंह महोदय ने अपनी वक्तृता में पारीक समाज को प्रोत्साहन देते हुए इसमें हाई स्कूल की कक्षाओं के संचालन कर देने का पूर्ण अनुरोध किया, जो आत्मीयता-पूर्ण आग्रहरूप की भाँति किसी को भी आकृष्ट किये बिना नहीं रह सका। परिणामस्वरूप ता० २१ अक्टूबर सन् १९२४ को पाठशाला-संचालकों के स्तुत्य यत्न से अजमेर सन् १९२५ के अधिवेशन में यू० पी० शिक्षा बोर्ड द्वारा इसे हाई स्कूल बना देने की अनुमति प्राप्त हो गई और सन् १९२५-२६ के सत्र से इसमें हाईस्कूल की कक्षा संचालित करदी गई।

स्व० श्री स्वरूपनारायणजी ने पाठशाला के लिए नाहरगढ़ की सड़क पर जो एक भव्य भवन बनवा दिया था, उस उसी में पुनः आपने २५०००) रु० व्यय करके दो तीन मंजिलें और तैयार करवादीं। इस तरह स्थान-संकीर्णता के दूरीकरण के साथ ही आपने ५००००) रु० पाठशाला को प्रदान कर उसके आर्थिक पर्यावरण के पल्लवन में भी अपनी अनन्यता प्रदर्शित की, किन्तु थोड़े समय के पश्चात् ही अप्रत्याशित छात्रों के प्रवेश लेने के कारण पुनः यहाँ भवनान्तर की आवश्यकता सबके विचार का विषय बन गई। इधर हाईस्कूल का सम्बन्ध यू० पी० शिक्षाबोर्ड से न रह कर 'राजपूताना शिक्षा बोर्ड, अजमेर' से हो जाने पर वहाँ के अधिकारियों द्वारा नगर के उपकण्ठ में किसी पुनीत वातावरण में विद्यालय-भवन की स्थापना का अनुरोध प्रकट की जाने लगी। आर्थिक-द्रव्य-व्ययापेक्षित भवन-निर्माण की इस स्थिति में प्रबन्धकों के समक्ष निश्चयतः एक विषम समस्या भी उपस्थित हो गई। किन्तु विषमताओं की अवस्थिति में भी अप्रतिकूल विधाता एक सामञ्जस्य पूर्ण आलोक दे सम्पन्न करा ही देता है। अतः उन्हीं स्वर्गीय दानवीर श्री स्वरूपनारायणजी तिवाड़ी के अनुज स्वनामधन्य श्रीमान् गोविन्दनारायणजी तिवाड़ी एवं प्रवीण श्रीमान् कन्हैयालालजी एम० ए० विशारद महोदय ने अनुपम अनुकरणरूप में चली आती हुई दानशीलतातिरेकता के प्रभूत प्रभाव से विद्यालय के लिए एक भव्य भवन बनवा देने की स्वीकृति प्रदान कर प्रशस्त व्यवस्था की पावनता प्राप्त की। पाठशाला की प्रबन्ध-समिति को जयपुर-राज्य द्वारा विद्यालय के लिए ता० २ अप्रैल सन् १९३२ को बनीपार्क में ४५०×६३३ व १६×६३३ फीट भूमि भी प्राप्त हो गई और ता० १२ जून १९३५ को जयपुर-राज्य के तत्कालीन अर्थमन्त्री रा० ब० राजा अमरनाथ अटल द्वारा भव्य भवन की अटल नींव लगाई गई तथा उस समय श्रीतिवाड़ी-वंश द्वारा की हुई विद्यालय की उल्लेख्य सेवाओं की स्थापिता-दिशा से इसका नाम "श्री स्वरूप गोविन्द पारीक विद्यालय" निर्धारित करके सभी ने अपनी कृतवेदिता और भावुकता का जो परिचय दिया, वह भी नितान्त हर्ष का विषय रहा। अस्तु।

समय सदा सदागति की गति से भी विशेष गतिशील हुआ करता है। अतः श्रीमान् तिवाड़ी महोदयों की तन-मन-धन के साथ संलग्नता से शिक्षा-विभाग द्वारा स्वीकृत भवन-चित्र की आधारशिला पर अल्पकालमें ही विद्यालय का विशाल भवन बनकर सम्पन्न हो गया। भवन के प्रमुख भाग की पृष्ठभूमि पर बनवाया हुआ वीणापाणि वरदा शारदा का चित्र आज भी विनीत चित्तों को आकर्षित किये बिना नहीं रहता।

इस नूतन भवन के उद्घाटनोत्सव का समुचित समारोह ता० १० मार्च सन् १९३८ को अमन्द आनन्द के साथ जयपुर-राज्य-पुरन्दर श्री महाराजाधिराज राज-

नरेन्द्र श्री सवाईमानसिंह महोदय के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भी सिंघाड़ी-परिवार की ओर से विद्यालय को दस हजार का अनुदान भी दिया गया था।

उस दिन इस भव्य मन्दिर भवन में आयोजित स्वल्पाहार का आयोजन स्मृति-पटल का अतिथि बना हुआ आज भी चित्त में अमिट रहता सा देता है। यह समारोह एक सप्ताह तक निरन्तर बिना अन्तराय के चलता रहा। ता० १२ मार्च को तत्कालीन शिक्षाध्यक्ष के आध्यक्ष्य में पारितोषिक वितरणोत्सव भी मनाया गया।

एक वर्ष पश्चात् पुनः तत्कालीन डाइरेक्टर मिस्टर विलियम ओवन्स के सभापतित्व में पारितोषिक-वितरणोत्सव सम्पन्न हुआ और तदनन्तर सन् १९४१ में जयपुर के तत्कालीन प्रधानामात्य राजा ज्ञाननाथ महोदय के आध्यक्ष्य में वार्षिक महोत्सव आयोजित हुआ।

यद्यपि इस तरह अब तक प्रबन्ध-समिति और श्री सिंघाड़ी-परिवार की दानशीलता से क्रमशः समुन्नति शिखर की ओर अग्रसर होते हुए इस विद्यालय में हाई स्कूल की कक्षाएं ही चलती आ रही थीं किन्तु इसे कालेज बना देने का ध्येय तो सभी के अन्तस्तल में दृढ़मूलता लिए हुए था। अतः इण्टर कालेज की आकांक्षा से प्रबन्ध-समिति ने राजपूताना शिक्षा-बोर्ड अजमेर को लिखा और वहाँ से यथासमय निरीक्षकों के द्वारा सम्यक् पर्यवेक्षण किया जाकर सर्वविध सम्भार-जात की निरतिशय स्फुटता के परिणामरूप इण्टर कक्षाएं खोल देने की भी स्वीकृति प्राप्त हो गई। तदनुसार यहाँ अंग्रेजी के आवश्यक विषय के साथ हिन्दी संस्कृत इतिहास-राजनीति-अर्थशास्त्र-वाणिज्य के विषय चालू कर दिये गये। इसका उद्घाटन-समारोह जयपुर के तत्कालीन शिक्षा-विशेषाधिकारी श्री जे० सी० रोलो द्वारा सम्पन्न हुआ था। इस प्रकार 'श्री स्वरूप गोविन्द धार्मिक विद्यालय' के सत्प्रयास से जयपुर में सर्वप्रथम इण्टर कॉलेज का स्वरूप इसी संस्था ने प्राप्त किया है। सन् १९४७ में जयपुर में 'राजपूताना विश्वविद्यालय' की स्थापना होने पर इसका सम्बन्ध अब उससे कर लिया गया। इसबार भी सिंघाड़ी-बन्धुओं ने इस अवसर पर विद्यालय को एक लाख का दान प्रदान कर अपनी अद्वितीय वदान्यता का और भी परिचय दिया।

शुभ उपकारिता किसी विशेष अवसर की प्रतीक्षापेक्षिणी नहीं हुआ करती है। इसलिए ता० १ अक्टूबर १९४२ को श्री जयपुर-महीमहेन्द्र की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए विद्यालय के वार्षिकोत्सव पर श्री सिंघाड़ी-परिवार ने विद्यालय की सहायता के लिए पुनः एक लाख रुपये देकर और भी इसे दृढ़मूल बना दिया।

यहाँ इसका पुनरावर्तन अप्रासंगिक न होगा कि गृहीतामितव्रत स्व० भूमरलालजी एवं स्व० स्वरूपलालजी सिंघाड़ीबन्धु इस संस्था के संस्थापन के आदि-निदान थे। इनकी पुण्य-स्मृति को स्थायिता-सिद्धि के साथ साथ प्रतिदिन इन आदरणीय महानुभावों के पावन दर्शन की सद्भावना से विद्यालयभवन के प्राङ्गण में उनकी पाषाण-मूर्तियाँ स्थापित की गईं और सितम्बर सन् १९५२ में 'संस्थापक-समारोह-दिवस' नाम से एक विशाल आयोजन भी किया गया। उस अवसर पर बृहद्भोज एवं छात्रों के मोदक-वितरण प्रभृति का कार्यकलाप एक प्रकार से इनके सञ्चालकों की हार्दिक भाव-निष्पत्ति का ही मौलिक निरूपण था।

सफल परीक्षाफल एवं प्रबन्ध-सम्बन्धी अन्य सर्वविध चारु रचना की चारुविकस्वरता के साथ इण्टरकॉलेज के रूप में इस विद्यालय ने आठ वर्ष समाप्त किये

हों थे कि डिग्री कॉलेज में उसके परिवर्तन कर देने की सम्भावना सभी कार्यकर्ताओं को उत्प्रेरणा देने लगी। कॉलेज के मन्त्री अधिष्ठाननिदेश रा० ब० श्री गोकुलनारायणजी बी० ए० विशारद एवं प्रिंसिपल श्री गोपाललालजी पुरोहित एम० ए०, बी० टी० महोदय की कार्यतत्परता से तथा राजपूताना-विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री जी.सी. चटर्जी और राजस्थान-शिक्षाविभाग के अध्यक्ष श्री गजराजसिंहजी व उपाध्यक्ष श्री रामचन्द्रनारायण कुम्हारे महोदय के न्याय-संगत विवेचन से और राजस्थान के सर्व-सेक्रेटरी रा० ब० श्री गङ्गासहायजी एम. ए., एल. एल. बी. प्रभृति महानुभावों की सद्भावनानुगत अनुकम्पा के फलस्वरूप ता० १ जुलाई सन् १९५५ से इसमें कला विभाग की डिग्री कालेज की कक्षाएं खोल दी गई।

डिग्री कालेज की कक्षाएं चालू होने पर छात्रों के कमरों की न्यूनता अवश्य अनुभव में आने लगी। किन्तु श्रीमान् तिवाड़ीमहोदयों ने अपनी कुलानुगत दानशीलता के कारण विद्यालय के पृष्ठ भाग में दोनों तरफ चार बड़े कमरे और तैयार करवा दिये। सम्प्रति इस भवन में हाईस्कूल से डिग्री कालेज तक के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं और नगर वाले प्राचीन भवन में प्रारम्भ से अष्टम कक्षा तक के छात्र विद्याध्ययन कर रहे हैं। अग्रिम सत्र से हाई स्कूल की कक्षाएँ भी वहीं पर ही चली जावेंगी

इस तरह पाठशाला के रूप में जन्म लेकर क्रमशः समुन्नति के शिखर-शिखर की ओर अग्रसर होते हुए इस विद्यालय ने सन् १९५६ में अपने जीवन-काल के ५० वर्ष बिना व्यवधान के समाप्त किये हैं।

पचासवें वर्ष की सुखद समाप्ति के उपलक्ष्य में कार्यकारिणी समिति ने इसकी सुवर्ण-जयन्ती मनाने की दृढ़ धारणा से जयपुर-महाराज श्री सवाई मानसिंह महोदय द्वारा इस समारोह के उद्घाटन कराने का निश्चय करके उनसे प्रार्थना की। इन महोदय की सदा से ही इस संस्था पर कृपादृष्टि रही है। अतः आपने एतदर्थ ता० २८ नवम्बर, सन् १९५६ का दिन निश्चित कर दिया।

श्री जयपुर-महाराज के पधारने की सूचना पाकर सभी कार्यकर्ताओं में अद्भुत उत्साह का संचार हो गया और वे ता० २४ नवम्बर से ता० ६ दिसम्बर तक विभिन्न कार्यक्रमों के साथ इस समारोह का कार्यक्रम बनाकर उस दिन की प्रबल प्रतीक्षा में प्रतिक्षण विलक्षण विचित्रता का अनुभव करने लगे। श्री तिवाड़ी परिवार के उल्लासातिरेक का तो अपूर्व प्रवाह था, क्योंकि आज उन्हीं के द्वारा अंकुरित इस विद्यालय-पारिजात की सुवर्ण—जयन्ती बड़े समारोह से मनाई जा रही थी।

ता० २८ को प्रातः विद्यालय-विराजित श्री श्रीनाथ प्रभु के देवायतनों को सुवर्ण-वितरण किया गया। सायं ४ बजे श्री मानसिंह महोदय पधारे। कॉलेज के एन. सी. सी. के विद्यार्थियों ने आपका सैनिक-स्वागत किया और सिंहासन पर पधारने के साथ ही राष्ट्रिय गायन द्वारा कार्यारंभ कर दिया गया। विद्यार्थियों के स्वागत गायन के पश्चात् श्री तिवाड़ी-परिवार ने जयपुर—महाराज की सेवा में उपायन निवेदन किये। इसके पश्चात् श्री गोविन्दनारायणजी तिवाड़ी ने विद्यालय के इतने वर्षों के जीवन का सिंहावलोकन कराते हुए अपनी प्रारम्भिक वक्तृता पढ़ी, जिसके उत्तर में जयपुर-महाराज ने बड़ा ही सन्तोष प्रकट किया। तद-

अनंतर श्री त्रिवाड़ी कन्हैया लाल जी एम. ए. द्वारा कृतज्ञता-ज्ञापन करने के पश्चात् श्री मानसिंह महोदय के स्वल्पाहार ग्रहण के साथ आज का कार्यक्रम समाप्त किया गया।

ता० २९ नवम्बर को सायं ४ बजे राजस्थान के भू० पू० प्रधान मन्त्री श्री हीरालाल जी शास्त्री की अध्यक्षता में पूर्व और वर्तमान छात्रों के विभिन्न खेल कूदों का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम की समाप्ति में श्री शास्त्री जी की प्रमुख वक्तृता के पश्चात् पं० श्री श्यामसुन्दर जी शर्मा एम.ए.,एल. टी.,पं० पूर्णकुमारजी एम. ए., और सेठ श्री मोहन लाल जी दूगड़ के भाषण हुए। श्री त्रिवाड़ी कन्हैयालालजी द्वारा धन्यवाद-वितरण के पश्चात् इस दिन का कार्य सम्पन्न हुआ।

ता० ३० नवम्बर को पु० प्रताप नारायण जी कविरत्न के सभापत्य में 'पारीक जातीय समारोह' मनाया गया। श्री गोपाल लाल जी पुरोहित एम०ए० प्रिंसिपल महोदय ने सर्वप्रथम विगत समय के कार्यों पर विहंगम दृष्टि डालते हुए दिवंगत आत्माओं की शान्तिकामना की। तत्पश्चात् 'अखिल भारतीय पारीक परिषद्' एवं ''पारीक बन्धु'' की ओर से त्रिवाड़ी-बन्धुओं की सेवा में भिन्न-भिन्न अभिनन्दन पत्र भेंट किये गये। श्री गोविन्दनारायण जी त्रिवाड़ी ने इनके उत्तर में पारीक समाज का भारी आभार प्रकट किया। श्री रामनारायणजी कलवाड़ वालों ने इस समारोह में विद्यालय को ५०००) रु० का दान भी दिया। इसके पश्चात् श्री त्रिवाड़ी कन्हैयालाल जी एम०ए० ने धन्यवाद देकर सबके स्वल्पाहार-सम्मेलन के साथ इस दिन के कार्यक्रम की समाप्ति की।

ता० १ दिसम्बर को ४ बजे इस विद्यालय के भूतपूर्व छात्र राजस्थान-जनसेवा-आयोग के सचिव पं० श्री श्यामसुन्दरजी शर्मा एम. ए., एल. टी. के आध्यक्ष्य में पूर्वछात्रों का सम्मेलन सम्पन्न हुआ। उस दिन इसकी एक विधानसमिति का भी निर्वाचन हुआ जिसमें पं० श्री श्यामसुन्दरजी शर्मा एम. ए., एल. टी. सभापति और श्री आनन्द त्रिपाठीजी पारीक एम. कॉम. मंत्री निर्वाचित हुए।

इस दिन पुरानी बस्ती में जनता की ओर से श्री जयपुर-महाराज के अभिनन्दन का आयोजन किया गया था। अतः नाहरगढ़ रोड पर स्थित जॉब स्कूल में भी श्री सवाई मानसिंह जी का स्वागत किया गया।

इसी दिन रात्रि में राजस्थान-विधानसभा के अध्यक्ष पं० श्री नरोत्तमलालजी जोशी के सभापतित्व में वादविवाद की प्रतियोगिता का कार्य सम्पन्न हुआ। इस आयोजन में जयपुर के लॉ कालेज, मेडीकलकालेज, महाराजा कालेज, सुबोध इण्टर कालेज आदि के साथ साथ टोंक भरतपुर आदि की २२ संस्थाओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता में महारानी जया कालेज भरतपुर के छात्र प्रथम और लॉ कालेज जयपुर के छात्र द्वितीय रहे जिसके उपलक्ष्य में भरतपुर कॉलेज को शील्ड दी गई और छात्रों को पदक द्वारा पुरस्कृत किया गया। स्वल्पाहार के साथ यह कार्य भी सानन्द समाप्त हुआ।

ता० २ दिसम्बर को सूर्य ग्रहण के कारण कोई कार्यक्रम नहीं रहा। ता० ३ को राजस्थान के गृहमंत्री पं० श्री रामकिशोरजी व्यास के आध्यक्ष्य में विद्यार्थी सभा का उद्घाटन किया गया। प्रारंभ में श्री प्रिंसिपल महोदय ने इसका परिचय प्रस्तुत किया और पुनः इस सभा के मन्त्री ने अपना विवरण पढ़ा। श्रीमान् व्यासजी ने विद्यार्थीसभा के सदस्यों को इसकी उपयोगिता को हृदयंगम कराते हुए अपने भाषण में देश के उत्थान के लिए छात्रों की बड़ी आवश्यकता प्रकट की। इसके पश्चात् यह कार्यक्रम भी धन्यवाद-वितरण एवं स्वल्पाहार-ग्रहण के साथ सम्पन्न हुआ।

इस दिन रात्रि में हिन्दी-साहित्य-परिषद् के तत्वावधान में कवि-सम्मेलन भी आयोजित हुआ । इसके सभापति रा० यू० विश्व विद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति डा० श्री मथुरालाल शर्मा चुने गये थे, किन्तु उनकी पूजनीया माता का स्वर्गवास होजाने के कारण वे न पधार सके और उदयपुर-राज्य के भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री ठाकुर श्री मोहनसिंह जी कोठारी साहब की अध्यक्षता में यह कार्य सम्पन्न किया गया ।

इसमें अनुमानतः २० कवियों ने भाग लिया, जिसमें उदयपुर के अतिरिक्त दिल्ली-जोधपुर-वृन्दावन आदि के भी कवि सम्मिलित हुए । अन्त में श्री ठाकुर साहब ने भी डिंगल के अनेक वीररसपूर्ण सोरठों का पाठ किया ।

ता० ४ दिसम्बर को मांटेसरी स्कूल के छात्रों द्वारा 'कृष्ण सुदामा' का नाटक अभिनीत किया गया और ता० ५ दिसम्बर को कॉलेज के विद्यार्थियों ने भारतीय शिक्षापद्धति से सम्बन्धित एकांकी अभिनय प्रस्तुत किये । जिसमें कॉलेज की 'संस्कृत-साहित्य-परिषद' द्वारा पुरातन-कालीन शिक्षापद्धति का आभास कराते हुए 'महर्षि-वशिष्ठस्य आश्रमः' नामक एक संस्कृत प्रहसन भी प्रस्तुत किया गया था ।

ता० ६ दिसंबर का आयोजन पारितोषिक वितरण का था । इस दिन की अध्यक्षता के लिए राजस्थान के माननीय मुख्य मंत्री श्री मोहनलालजी सुखाडिया ने पधारने की कृपा की थी । प्रात का कार्यक्रम भी राष्ट्रीय गायन द्वारा ही शुरू हुआ । विद्यार्थियों ने प्रारंभ में स्वागत गान गाया । श्री त्रिवाडी गोविन्दनारायणजी ने अपने भाषण में जनशासन सफलता के लिए वर्तमान में हिन्दी-संस्कृत के अध्ययन की विशेष आवश्यकता प्रकट करते हुए देश के विकास के हेतु टेक्नीकल कॉलेजों की भी आवश्यकता प्रकट की । तदनन्तर श्रीयुत प्रिंसीपल महोदय ने अपने भाषण में माननीय मुख्य मन्त्री का ध्यान विशेष रूप से इन विषयों पर आकृष्ट किया—राजस्थान सरकार द्वारा राजकीय संस्थाओं के कार्यकर्ताओं को जो सुविधायें प्राप्त हैं वे प्राईवेट संस्थाओं के कार्यकर्ताओं को नहीं, छात्रावास के लिए भूमि का अभाव एवं सरकार की ओर से इस संस्था को पर्याप्त आर्थिक सहायता का न मिलना तथा इस प्रकार की 'शरण' संस्थाओं से भी पक्षपात किया जाना । आपके ये विचार सभी को आकृष्ट किये बिना नहीं रहे । श्रीयुत प्रिंसीपल महोदय के भाषण के पश्चात् प्रधान मंत्री महोदय ने भी त्रिवाडीजी के भाषण का उत्तर देते हुए संस्कृत साहित्य की शिक्षा के प्रति अपनी विशेष जागरूकता प्रकट की और वर्तमान में टेक्नीकल कालेजों के प्रसार के सम्बन्ध में भी अपने विचार रखा । इसके उपरान्त श्री सुखाडिया जी ने विद्यार्थियों को पारितोषिक वितरित की । उस दिन श्री त्रिवाडी कन्हैयालालजी एम० ए० महोदय ने भी इस कालेज से अपना एक बहुत पुराना 'गोल्ड मैडिल' नामक उत्तम-स्वर्ण-पदक प्राप्त किया । धन्यवाद-प्रदान और स्वल्पाहार के कार्यक्रम के साथ इस तरह इस सुवर्णजयन्ती महोत्सव का यह महान समारोह सानन्द समाप्त हुआ ।

इस समारोह में कालेज की 'कलापरिषद्' द्वारा शिक्षा सम्बन्धी प्रदर्शिनी का भी एक सुन्दर आयोजन किया गया था जो सभी के आकर्षण का विषय बना ।

इस शुभ अवसर पर यह सुन्दर संवाद भी किस मानव के मानस को आनन्ददायी न होगा कि श्रीमान् त्रिवाडी महोदयों ने "त्रिवाडी एजूकेशनल
... यूनीवर्सिटी के भूतपूर्व रजिस्ट्रार श्रीयुत पं० श्यामसुन्दर जी शर्मा एम. ए. ने "श्री हंसमुखलाल स्कालरशिप-

प्रस्तुत परिचय-सम्पादन में अपनी गरिष्ठ साहित्य-लिप्सा के अतिरिक्त इस प्रकार की ग्रंथोन्नति में विशिष्ट प्रतिष्ठा न होने के कारण अनेक त्रुटियां भी अवश्य रह गई होंगी, जिनका उत्तरदायित्व सम्पादक के अतिरिक्त संस्था ही किस पर आ सकता है। अतः हम भी एतदर्थ क्षमायाचन परम्परा का अवलम्बन ले लेना अपना आवश्यक धर्म समझते हैं।

श्री स्व० गो० पारीक कालेज,
जयपुर।
ता. २५-२-५७

विनीत—
नवलकिशोर काङ्कर,
सम्पादक—हिन्दीविभाग

दी यूनाइटेड प्रिन्टर्स, चौड़ा रास्ता, जयपुर।

"एजूकेशनल-ट्रस्ट" की स्थापना की है। हमारे विद्यार्थी वर्ग को अपने विकास के लिए इससे बहुत कुछ सहायता प्राप्त होगी। कालेज-परिवार की ओर से आपके इस अनुकरणीय कार्य का हम हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। अस्तु।

इस अपने प्राक्कथन की समाप्ति में यह लिखना भी अप्रासंगिक न होगा कि इस संस्था के अर्द्ध शताब्दीय गौरवमय इतिहास के साथ स्व० पं० पुरोहित गोपीनाथजी एम०ए०, के० टी०, सी० आई० ई०, ताजीमी सरदार स्व० रामनारायणजी पुरोहित, स्व० मास्टर गोपीनाथजी जोशी बी० ए० बी० टी०, विद्याभूषण स्व० हरिनारायणजी पुरोहित, ताजीमी सरदार श्रीयुत लक्ष्मीनारायणजी कविराज, पं० श्री रामचन्द्रजी एम० ए०, पं० श्री बद्रीनारायणजी बी० ए०, एल० टी० एस०, पं० श्री गंगासहायजी एम०ए०, एल० एल० बी०, पं० श्री हनुमानसहायजी बी०ए०, पं० श्री गोपालनारायणजी बोहरा एम. ए., पं० श्री गोविन्दवल्लभजी राजपुरोहित, श्री स्वरूपनारायणजी बी. ए., एल. एस. जी. प्रभृति महानुभावों की निस्वार्थ सेवाएँ भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

यदि निष्पक्षपातिता की पवित्र पृष्ठभूमि पर आत्मालाप की निर्भीकता-पूर्वक विवेचना ही वास्तविकता की परिभाषा मानी जाय तो यह भी स्पष्ट कहना पड़ेगा कि इस विद्यालय के इतिहास के साथ इसके प्राचीन सेवक एवं प्राचीन परम्पराओं के परम पोषक कालेज के वयोवृद्ध मन्त्री श्रीमान् पं० गोकुल सहायजी व्यास बी० ए० विशारद महोदय तथा हमारे सम्माननीय निरीक्षक पं० श्री गोपालदत्तजी एम० ए०, बी० टी० महानुभाव का नाम तो चिरस्थिर रहेगा ही, क्योंकि यह सब विकास आपकी ही कार्यतत्परता और अध्यवसायशीलता का मूर्त रूप है। यह निश्चय है कि यदि आपका इसमें अविरत मनोयोग न रहता तो अवश्य ही इस के विकास की विपन्नति में शैथिल्य का अनुभव हो जाता।

श्री विद्यार्थी-परिवार के सर्वविध शुभ सहयोग के विषय में तो हमें "गिरा अनयन नयन बिनु बानी" का ही अवलम्बन लेना होगा। इस परिवार के अपार उपकारों से विद्यालय का अणु अणु सदा के लिए भारी आभारी रहेगा, क्योंकि यह सर्वथा संशीतिशून्य है कि इस विद्यालय की जीवनाधुना विशेषतः श्री विद्यार्थीपरिवार पर ही निर्भर है। इस परिवार की अभ्युदयशीलता के हम सदा प्रार्थी हैं।

इस अङ्क की सुसज्जा का श्रेय उन सभी सज्जनों को है जिन्होंने हमारे किसी प्रकार के अनुरोध का विरोध नहीं किया। एतदर्थ हम अपने सहयोगियों के तो कृतवेदी हैं ही किन्तु हमारे सम्माननीय निरीक्षक श्रीगोपालदत्तजी पुरोहित एम० ए० के भी भारी आभारी हैं। आप अनवरत अनेक कार्यों में व्यापृत रहते हुए भी अपने सतत समुचित परामर्शों द्वारा हमारे पथप्रदर्शक बने रहे हैं। वस्तुतः आपका इसमें सहयोग प्रतिक्षणास्पद योग रहा है।

॥ विजयते श्री श्रीनाथः प्रभुः ॥

विजयते श्री श्रीनाथ-प्रभोः पादाम्बुजद्वयी ।
लभ्यते यत्प्रसादेन मंक्षु मञ्जु मुदां निधिः ॥

भगवत्-प्रेरणा से ही सब कुछ होता है, यह सब भी इनकी ही कृपा से हुआ है, मनुष्य केवल निमित्त मात्र है ।

स्वर्गीय जयपुर–महाराजा

श्री सवाई माधवसिंहजी

आप कुशल प्रजावत्सल होने के साथ-साथ भगवद्भक्त विद्या प्रेमी एक आदर्श शासक थे। आपके शुभ शासनसमय में जयपुर राज्य ने शिक्षा-प्रसार में उल्लेखनीय पर्याप्त प्रगति की है। इस संस्था ने भी आपके ही राज्य-काल में जन्म लिया था।

वर्तमान जयपुर–महाराजा

श्री सवाई मानसिंहजी

विद्यालय के कालेज-भवन का उद्घाटन आप ही के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ है। आपने अनेक बार यहाँ पधार कर संस्था को गौरवान्वित करने की कृपा की है। अभी स्वर्ण-जयन्ती-समारोह का आरम्भ भी आपने ही पधार कर किया है।

राजस्थान के राज्यपाल

श्री गुरुमुख निहालसिंह

शासन-कुशल होने के साथ-साथ आप इतिहास एवं राजनीति-शास्त्र के भी प्रकाण्ड विद्वान् हैं। इस वार्धक्य में भी क्रियाशीलता के आप मूर्त रूप हैं। शिक्षा-संस्कृति को आपसे बहुत आशाएँ हैं।

राजस्थान के मुख्यमन्त्री

श्री मोहनलाल सुखाड़िया

राजस्थान के मुख्यमन्त्री होने के साथ ही आप हमारे शिक्षा-मन्त्री भी हैं। आपने अभी स्वर्ण-जयन्ती के अवसर पर पारितोषिक वितरणोत्सव में अध्यक्षपद को भी सुशोभित किया है।

राजपूताना विश्व विद्यालय के आदि निदान

सर मिर्जा मोहम्मद इस्माइल

श्री जे० सी० रोलो, एम. ए.

राजपूताना विश्व विद्यालय के संस्थापन एवं व्यवस्थापन में इन दोनों व्यक्तियों का बड़ा सहयोग रहा है। यह आपके सदुयोग का ही परिणाम है कि यहाँ विश्व विद्यालय स्थापित हो सका। आप दोनों ही ने अनेक बार यहाँ पधारने की कृपा की है। इण्टर कक्षाओं का उद्घाटन तो श्री जे० सी० रोलो महोदय ही के कर कमलों से हुआ है।

राजपूताना विश्व विद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति

डा० जी० एस० महाजनो एम.ए., पी. एच. डी.

आप इस विश्व विद्यालय के प्रथम उपकुलपति थे। आजकल आप दिल्ली विश्व विद्यालय के उपकुलपति-पद को अलंकृत कर रहे है। आप में जैसा प्रवाह पाण्डित्य है, वैसा प्रबन्ध-पाटव भी है। इस कालेज पर आपकी सदा कृपा रही है।

डा० श्री मथुरालाल शर्मा एम.ए., पी. एच. डी.

आप भी इस विश्वविद्यालय के उपकुलपति-पद को विभूषित कर चुके है इससे पूर्व आप राजस्थान-शिक्षा विभाग के अध्यक्ष थे। आप प्राच्य और अर्वाच्य उभयविध विद्या के पारदृश्वा है। आपकी भी इस कालेज पर सदा ही सहानुभूति-पूर्ण भावना रही है।

राजपूताना विश्व विद्यालय के भूतपूर्व रजिस्ट्रार

श्री मदनमोहन वर्मा एम. ए.

आप इस विश्व विद्यालय के प्रथम रजिस्ट्रार थे। इससे पूर्व आप अजमेर-शिक्षा बोर्ड के सेक्रेटरी थे। आपके कार्यकाल में यहां अजमेर में सम्बद्ध इन्टर की कक्षाएं चालू की गई थी। आजकल आप राजस्थान-लोक-सेवा-आयोग के सदस्य हैं।

श्री एम. एम. सोलानी एम. ए.

श्री वर्मा जी के पश्चात् आपने रा० यू० विश्व विद्यालय के रजिस्ट्रार-पद को सुशोभित किया था। आपके कार्यकाल में भी इस विश्व विद्यालय ने सर्वतोमुखी बड़ी उन्नति की है। यहां पर इस कालेज में भी डिग्री-कक्षाएं आपके ही कार्यकाल में चालू हुए हैं।

राजपूताना विश्व विद्यालय के वर्तमान उपकुलपति

श्रीयुत जो० सो० चटर्जी एम. ए.

आपका विशिष्ट वैदुष्य विशेष विस्तृत है। आपके समय में भी विश्वविद्यालय ने अपना बड़ा प्रसार और विकास किया है। इस कालेज को डिग्री कालेज का रूप देने में आपकी बड़ी सहानुभूति रही है।

राजपूताना विश्व विद्यालय के वर्तमान रजिस्ट्रार

श्रीयुत के० एल० वर्मा एम. ए.

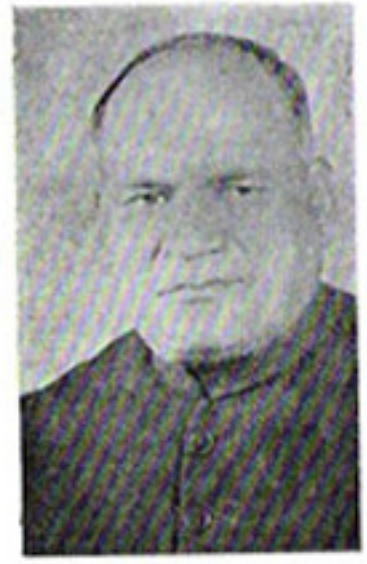

शिक्षा क्षेत्र में श्री वर्माजी का महान् स्थान है। रजिस्ट्रार पद का भार वहन करने से पूर्व आप जयपुर-महाराज-कालेज के प्रिंसीपल थे। विद्वान् होने के साथ आप कार्यपटु भी हैं। हम आपकी सफलता हृदय से चाहते हैं।

जयपुर राज्य तथा राजस्थान के भूतपूर्व शिक्षा-विभागाध्यक्ष

स्व० विलियम ग्रोवेन्स, बी.ए., एम.बी.ई,

आपने पर्याप्त समय तक जयपुर-राज्य के शिक्षा विभाग की अध्यक्षता की थी। इस कॉलेज के नये भवन के लिए राज्य से भूमि दिलाने में आपका बड़ा हाथ रहा था।

श्रीयुत स्वरूपकृष्ण जिब्बू, एम. एस-सी.

आप जयपुर-राज्य तथा राजस्थान के शिक्षा-विभाग के अध्यक्ष रहे है एवं राजस्थान-शिक्षा-विभाग के सैक्रेटरी-पद को भी सुशोभित कर चुके है। आजकल आपने विश्रामवृत्ति लेली है। इस समय आप हमारी बालचर-संस्था के स्टेट-कमिश्नर है तथा अखिल भारत वर्षीय द्वितीय जंबूरी में भी आपने उप-शिविराधिपति के पद को अलंकृत किया है।

राजस्थान के भूतपूर्व शिक्षा-विभागाध्यक्ष

श्री कुँवर गजराजसिंहजी

एम. ए., टी. डी.

आपकी अध्यक्षता में शिक्षाक्षेत्र ने पर्याप्त प्रगति की है। इस संस्था ने भी आप ही के कार्य-काल में डिग्री-कालेज का रूप प्राप्त किया है।

राजस्थान के वर्तमान शिक्षा-सचिव

श्री सत्यप्रसन्नसिंहजी भण्डारी

एम. ए., आई. ए. एस.

आप शिक्षा विभाग के सेक्रेटरी है। आप जैसे परम अनुभवी शिक्षा-संचालक को पाकर इस विभाग को बहुत बड़ी आशाएँ है।

राजस्थान-शिक्षा-विभाग के भूतपूर्व उपाध्यक्ष

श्रीयुत आर. बी. कुंभारे, एम. ए.

श्री कुंभारे महोदय राजस्थान के माने हुए शिक्षा-शास्त्रियों में से हैं। अनेक भाषाओं में आपकी गति है। संस्कृत साहित्य से आप विशेष रुचि रखते हैं। इस संस्था को डिग्री कालेज बनाने में आपका शुभ सहयोग रहा है।

राजस्थान-शिक्षा-विभाग के वर्तमान उपाध्यक्ष

श्री बी० जी० तिवाड़ी, बी.एस.सी., बी.टी.

श्री तिवाड़ी जी कुशल अनुशासक होने के साथ ही साथ एक विशिष्ट व्यवस्थापक भी हैं। आप पहले यहाँ शिक्षा-विभाग में निरीक्षक-पद पर थे। इस संस्था को आपके द्वारा सदा से सर्वविध सहयोग प्राप्त होता रहा है।

इस कालेज की स्थापना के आदि निदान

भगवद्भक्त दानवीर बन्धु

स्वर्गीय झूमरलालजी तिवाड़ी

स्वर्गीय स्वरूपलालजी तिवाड़ी

इस संस्था के संस्थापक आप ही दोनों वदान्य-मूर्धन्य महापुरुष थे। आजन्म आपने इसके सर्वविधि संवर्धन में पुरोभागिता प्राप्त की है। यह आपके ही औदार्य का परिणाम है कि आज इस संस्था को समुन्नत बनाने के हेतु आपके वंशज भी सतत प्रस्तुत रहते हैं जिसके फलस्वरूप यह संस्था डिग्री कालेज के रूप में ज्ञता की सेवा कर रही है।

इस कालेज के प्रधान अवलम्बन

दानवीर भगवद्भक्त

श्री गोविन्दनारायणजी तिवाड़ी

आप राजस्थान के कुशल व्यवसायी, धर्मनिष्ठ, विद्याप्रेमी भगवद्भक्त हैं। ईश्वर में अचलभक्ति और विश्वास रखते हुए आप इस कालेज की उन्नति में अनवरत व्यस्त रहते हैं।

श्री कन्हैयालालजी तिवाड़ी एम.ए.

आप साहित्य-संसार के एक सुप्रसिद्ध सुलेखक, सुवक्ता और सुकवि हैं। आपका सामयिक ज्ञान व्यापक है। आप भी इस कालेज की उन्नति-निमित्त अविरत प्रस्तुत रहते हैं।

इन तिवाड़ी-बन्धुओं द्वारा इस संस्था को अब तक आठ-दस लाख रुपये प्राप्त हो चुके हैं और भविष्य में भी इसे इस परिवार से अनेक आशाएँ हैं। वास्तव में इस कालेज की जीवालुता प्रधानरूप से इसी परिवार पर अवलम्बित है। एतदर्थ इसका अणु-अणु अंश सदा के लिए इस परिवार का भारी आभारी रहेगा।

श्री तिवाड़ी-परिवार के उदीयमान उज्ज्वल अंकुर

आयुष्मान् श्री प्रद्युम्नकुमार तिवाड़ी

आयुष्मान् श्री अरुणकुमार तिवाड़ी

श्री प्रद्युम्नकुमार तिवाड़ी द्वितीय श्रेणी से बी० कॉम और प्रथम श्रेणी से एल.एल.बी. की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए हैं। आप परम प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं। श्री अरुणकुमार तिवाड़ी इस समय प्रथमवर्ष में वाणिज्य शास्त्र का अध्ययन कर रहे हैं। आप भी एक होनहार कुमार हैं।

साहित्य भूषण, विद्यारत्न स्व० रावबहादुर पुरोहित

सर गोपीनाथजी, के.टी., सी.आई.ई., एम.ए., एम.आर.ए.एस.

आप हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी साहित्य के बड़े विद्वान् तथा प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ थे। आपने अनेक पुस्तकें भी लिखी थीं। आबू में आप कई वर्षों तक जयपुर राज्य के प्रतिनिधि तथा पर्याप्त समय तक कौंसिल ऑफ स्टेट के सदस्य भी रहे थे। आपको जयपुर राज्य ने ताजीमी सरदार का पद एवं भारत सम्राट् ने अनेक उपाधियां प्रदान की थीं। जयपुर में सर्व प्रथम आपको ही 'नाइट हुड' का पद प्राप्त हुआ था। इस संस्था के आप सभापति रहे थे और बड़ी तत्परता से आपने आजीवन इसकी सेवा की थी।

स्व० पु० रामनिवासजी एम. ए.

शिक्षा-प्रेमियों में आपका यहाँ बड़ा स्थान था। आप चौमू ठिकाने में सर्वोच्च अधिकारी थे। इस संस्था के प्रारम्भिक जीवन में आपका बहुत सहयोग रहा था।

श्री हीरालालजी शास्त्री बी. ए.

आपमें प्रारंभ से ही शिक्षा-प्रेम के साथ उत्कट राष्ट्रिय-भावना कूट कूट कर भरी हुई है। आपके द्वारा स्थापित 'वनस्थली विद्यापीठ' इस का मूर्त्तरूप है। आपने कुछ वर्षों तक इस संस्था में निःशुल्क अध्यापन का कार्य भी किया है और इस की कार्यकारिणी समिति के आप सदस्य भी रहे हैं।

श्री गोकुलनारायणजी व्यास, बी.ए. विशारद

श्रीयुत व्यासजी प्रौढ विचारों के एवं दृढ धारणाओं के प्रतीक है । आप में प्राचीन परम्परा के अक्षुण्ण रखने की भावना सदा जागरूक रहती है । इस संस्था को प्रारम्भिक समय से ही आपका शुभ सहयोग प्राप्त होता आरहा है । इस समय भी वार्धक्य में आप इस संस्था के मन्त्रित्व का भारी भार वहन किये हुए है । वस्तुतः आपके द्वारा निर्दिष्ट पथ पर चलता हुआ यह कालेज उत्तरोत्तर उन्नति की ओर अग्रसर होता जा रहा है । ईश्वर से हम आपकी आयुष्कामना करते है ।

श्री गोकुलनारायणजी व्यास, बी.ए. विशारद

श्रीयुत व्यासजी प्रौढ विचारों के एवं दृढ धारणाओं के प्रतीक है । आप में प्राचीन परम्परा के अक्षुण्ण रखने की भावना सदा जागरूक रहती है । इस संस्था को प्रारम्भिक समय से ही आपका शुभ सहयोग प्राप्त होता आरहा है । इस समय भी वार्धक्य में आप इस संस्था के मन्त्रित्व का भारी भार वहन किये हुए है । वस्तुतः आपके द्वारा निर्दिष्ट पथ पर चलता हुआ यह कालेज उत्तरोत्तर उन्नति की ओर अग्रसर होता जा रहा है । ईश्वर से हम आपकी आयुष्कामना करते है ।

स्वर्गीय विद्याभूषण हरिनारायणजी बी. ए.

आप राजस्थान के ही नहीं, भारत भर के प्रौढ़ साहित्य-सेवक थे। हिन्दी, संस्कृत, उर्दू और अङ्गरेजी में आपका पूर्ण प्रवार था। आपने अनेक पुस्तकें भी लिखी हैं। 'सुन्दर ग्रन्थावली' का सम्पादन आपने ही किया था। आप इस संस्था के मन्त्री सभापति आदि पदों पर रहते हुए आजन्म इस के उत्थान में तत्पर रहे। तिवाड़ी-परिवार के पश्चात् इस संस्था के आर्थिक सहायकों में आप ही का प्रमुख स्थान है।

स्वर्गीय ताजीमी सरदार रामप्रतापजी पुरोहित

आप जयपुर राज्य के सुप्रसिद्ध ताजीमी सरदार थे। आपका कला एवं शिक्षा-प्रेम बहुत उच्च था। आपने श्रीकृष्ण-विज्ञान आदि अनेक पुस्तकें भी लिखी हैं। इस संस्था के बहुत बड़े पोषक रहते हुये आप ने इसके सभापति-पद को भी अलंकृत किया था।

श्री पुरोहित प्रतापनारायणजी कविरत्न

ताजीमीसरदार

आप साहित्य-जगत् के ख्याति-प्राप्त कुशल कवि एवं एक विशिष्ट विद्या-व्यसनी व्यक्ति हैं। आपमें अपने पितामह स्व० श्री हरिनारायणजी विद्याभूषण एवं पितृचरण स्व० श्री रामप्रतापजी के समस्त गुण विद्यमान हैं। नल नरेश-काव्यकानन आदि आपकी अनेक रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। इस समय आप इस संस्था के सभापति पद को विभूषित कर रहे हैं।

श्री पु० बदरीनारायणजी बी.ए., एफ.टी. एस.

आप जयपुर नगर के एक विशिष्ट विद्या-प्रेमी एवं परम उत्साही वयोवृद्ध व्यक्ति है। इस संस्था के प्रारम्भिक काल में आपने इसकी सराहनीय सेवाएं की हैं। धन-संग्रह एवं अन्य अनेक योजनाओं में आप सहर्ष भाग लेते रहे है।

श्री पुरोहित रामगोपालजी बी.ए., एल.एल.बी.

आप स्व० हरिनारायणजी के पुत्र है। आप पहले जयपुर में मजिस्ट्रेट थे और सप्लाई विभाग के भी आप अध्यक्ष रहे है। आजकल आपने विश्राम ग्रहण कर लिया है। आप इस संस्था की कार्यकारिणी समिति के सदस्य भी रह चुके हैं।

स्व० पुरोहित रामनारायणजी बी०ए०

आप जयपुर राज्य के वन-विभाग में अध्यक्ष थे। इस संस्था के प्रारंभ समय में आपका बड़ा सहयोग रहा था।

श्रीयुत पु० हनुमानसहायजी बी०ए०

आप स्व० श्री रामनारायणजी बी० ए० के सुपुत्र हैं। आप इस संस्था के संयुक्त मन्त्री एवं मन्त्री भी रहे हैं। आजकल आप इसकी कार्यकारिणी समिति के सदस्य हैं।

स्व० गोपीनाथजी जोशी, पी० ए० डी०

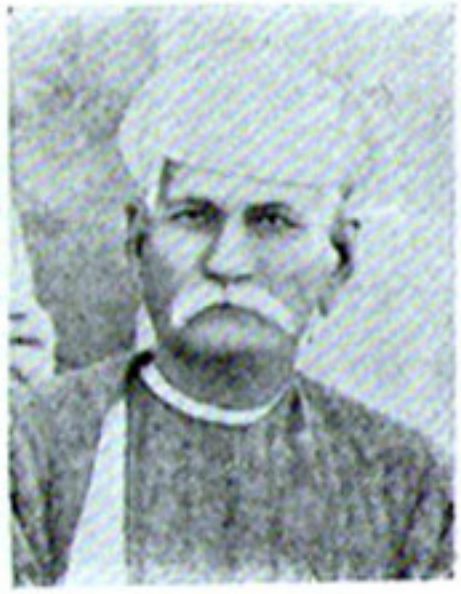

शिक्षानुराग के साथ आपमें समाज-सुधार की भावना भी उच्च कोटि की थी। इस संस्था से आपका प्रारम्भ से ही घनिष्ट सम्बन्ध रहा था। आप इसके सभापति भी रहे थे।

श्री पु० रामकिशोरजी जोशी

आप स्व० गोपीनाथजी जोशी के ज्येष्ठ पुत्र हैं और आप इस संस्था की कार्यकारिणी समिति के सदस्य भी रह चुके हैं।

श्रीयुत पं० गङ्गासहायजी सैक्रेटरी
एम. ए., एल. एल. बी.

आप वर्तमान महान् राजस्थान के अर्थसचिव हैं। इससे पूर्व आप जयपुर राज्य के अर्थ सचिव थे। आप इस संस्था के मन्त्री भी रह चुके हैं तथा वर्तमान में कार्यकारिणी समिति के सदस्य हैं।

श्रीयुत पं० बंशीलालजी बी. ए.

आप जयपुर राज्य के कोषाध्यक्ष थे। आज कल आप विश्रामवृत्ति प्राप्त कर रहे हैं। आपका इस संस्था के साथ सदासे ही पर्याप्त सहयोग रहा है एवं आप इसकी कार्यकारिणी समिति के सदस्य भी रहे हैं।

पं० श्री नन्दकुमारजी वासिष्ठ
बी.ए., एल.टी., एल.एल.बी.,

कई वर्षों तक आप इस संस्था के हैडमास्टर रहे हैं। स्वास्थ्य की अनुकूलता के कारण सन् १९३७ में आपने यह पद त्याग दिया था। आप पं० श्यामसुन्दरजी शर्मा एम० ए० के ज्येष्ठ भ्राता हैं और आजकल आप अपना विशेष समय ईश्वर की समाराधना की साधना में ही व्यतीत करते हैं।

पं० श्री श्यामसुन्दरजी शर्मा
एम० ए०

आपने अपना जीवन शिक्षाक्षेत्र में ही व्यतीत किया है। आप जयपुर राज्य के शिक्षाविभागाध्यक्ष, बनारस लखनऊ और आगरा विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार एवं राजस्थान के शिक्षासचिव तथा मुख्यमन्त्री के प्रिंसीपिल प्राईवेट सेक्रेटरी पदों पर रह चुके हैं। इस संस्था को हाईस्कूल बनाने में आपका प्रधान हाथ रहा है। आजकल आप एक लाख रुपये दान में देकर "श्री हांमूलाल-स्कालरशिप ऐंड़ाऊमेन्ट ट्रस्ट" स्थापित करने में संलग्न हैं।

स्वर्गीय सूरजनारायणजी पुरोहित

आप का वंश पारीक-समाज में चेनवुरा वालों के नाम से प्रसिद्ध है। आपमें विद्या-प्रेम कूट-कूट कर भरा हुआ था। इस संस्था की कार्यकारिणी समिति के आप सदस्य भी रहे थे। अपने जीवन काल में आपने सदा ही इसके उत्थान और प्रसार के लिए सहर्ष सर्वविध सुशोभन सहयोग दिया था।

पं० श्री गोपालनारायणजी बोहरा एम. ए.

आप एक प्रगतिशील नवयुवक एवं संस्कृत-साहित्य के विशिष्ट विद्वान् है। इस संस्था में आपने कुछ वर्षों तक अध्यापन का कार्य भी किया है। वर्तमान में आप राजस्थान-पुरातत्व-विभाग में उच्चपद पर कार्य कर रहे है और इस संस्था की वर्तमान कार्यकारिणी समिति के आप सदस्य है।

श्रीयुत गोपीवल्लभजी राजपुरोहित

आपकी वंशपरम्परा का पारीक-समाज में प्रारम्भ से ही प्रसमान मान समान रूप से चला आ रहा है। आप जयपुर-नगरपालिका समिति के कई वर्षों तक सदस्य रह चुके हैं। इस संस्था से भी आपको सदा से स्नेह रहा है। इस समय आप इसकी कार्यकारिणी समिति के सदस्य हैं।

श्री स्वरूपनारायणजी बी.ए., एल. एल.बी.

आप का वंश सीकर वाले पुरोहितजी की अभिरुचा से विख्यात है। राजस्थान के पारीक-समाज में आपका विशिष्ट स्थान है। प्रगतिशील कार्यों में आप विशेष अभिरुचि रखते हैं। इस संस्था की वर्त्तमान कार्यकारिणी समिति के आप सदस्य हैं और अनवरत इसकी उन्नति चाहते रहते हैं।

श्री रामनारायणजी पुरोहित कलवाड वाले

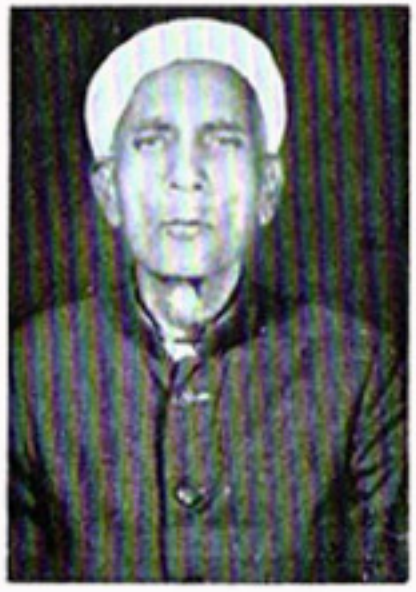

आप जयपुर के सुप्रसिद्ध एक कुशल वस्त्र-व्यापारी हैं। आपमें समाज सेवा की उत्कट भावना भरी हुई है। इस संस्था की आप बहुत समय से निरन्तर आर्थिक सहायता करते आ रहे हैं। अभी कालेज की सुवर्ण जयन्ती के अवसर पर भी आपने इस विद्यालय को पांच हजार रुपये दान में दिये हैं।

श्रीयुत प्रोफेसर जे. एम. घोष., एम. ए.

आप इतिहास के विशेषज्ञ हैं। राजस्थान सरकार ने आपको इस संस्था की कार्यकारिणी समिति का मनोनीत सदस्य बना रक्खा है। आप पहले जयपुर-महाराज-कालेज में वाइस प्रिंसीपल थे। आजकल आप इस कॉलिज में इतिहास-विषय की प्राध्यापकता करते हुए इसे गौरवान्वित बना रहे हैं।

स्व० ठाकुर साहब देवीसिंहजी
चोमू वाले

आप जयपुर-राज्य के उच्चतम जागीरदारों में प्रमुख माने जाते थे । आपका शिक्षा-प्रेम किसी से तिरोहित नहीं था । इस संस्था को आपसे सदा आर्थिक सहायता प्राप्त होती रही है और अब भी आपके उत्तराधिकारियों से इस संस्था को वैसी ही पूर्ण आशा है ।

महारावल श्री संग्रामसिंहजी
सामोद वाले

आपका भी जयपुर राज्य के उच्चतम भूमि-पतियों में महत्वपूर्ण स्थान है । आप एक विशिष्ट विद्या-प्रेमी व्यक्ति है । शिक्षाक्षेत्र में आपका सहयोग सदा से सराहनीय रहा है । आप इस संस्था की आर्थिक सहायता सदा से करते आ रहे है और भविष्य में भी आप से यही पूर्ण आशा है।

स्व० पं० माधवप्रसादजी शास्त्री
सिद्धान्त वागीश

आप इस विद्यालय के सर्वप्रथम अध्यापक थे। आपने आजीवन इसी संस्था की सेवा की है। आप ज्योतिष के भी विशिष्ट विद्वान् थे।

स्व० पं० लक्ष्मीनारायणजी
पुरोहित

आप इस विद्यालय में हैडमास्टर थे। मिडिल स्कूल से इसके हाई स्कूल बनाने में आपकी बहुत प्रेरणा रही थी।

श्री रघुनाथ सहायजी बी०ए०
एल० एल० बी०

आप इस समय जयपुर नगर के प्रसिद्ध वकीलों में से हैं। प्रारम्भ में आप भी इस विद्यालय के हैडमास्टर रह चुके हैं।

स्व० जगन्नाथजी व्यास
चोमू वाले

आपने इस संस्था की सहायता में पूरा सहयोग दिया था और इसकी कार्य-कारिणी समिति के आप सदस्य भी रहे थे।

स्व० बदरी नारायणजी केसोट
और
स्व० दामोदरजी पुरोहित

आप दोनों ही व्यक्ति इस विद्यालय के बहुत पुराने अध्यापक थे।

हमारे मनोनीत प्रिंसीपल

श्रीयुत पं० गोपाललालजी पुरोहित, एम. ए., बी. टी.,

इतिहास–विशेषज्ञ

जयपुर के शिक्षा-शास्त्रियों में आपका स्पृहणीय सम्मान है। इतिहास शास्त्र के आप विशिष्ट विद्वान् समझे जाते हैं एवं प्रारंभ से ही आप रा.पू. विश्वविद्यालय के सिनेट के सदस्य भी है। गत २५ वर्षों से आप इस संस्था की सेवा में संलग्न है और वर्तमान में इसके प्रधान आचार्य हैं। आपके ही कार्यकाल में यह विद्यालय हाईस्कूल से डिग्री कॉलेज बना है। कॉलेज की यह सर्वतोऽभिमुखी अभ्युन्नति आपकी श्रमशालीनता की प्रतिमूर्ति है। आपने अपने विशेष बंदुत्व, शासन-नैपुण्य एवं व्यवहार-प्रावीण्य से सभी को आवर्जित कर लिया है। इस संस्था को आप से अभी बहुत आशाएं हैं।

श्री पारीक-हितकारिणी सभा

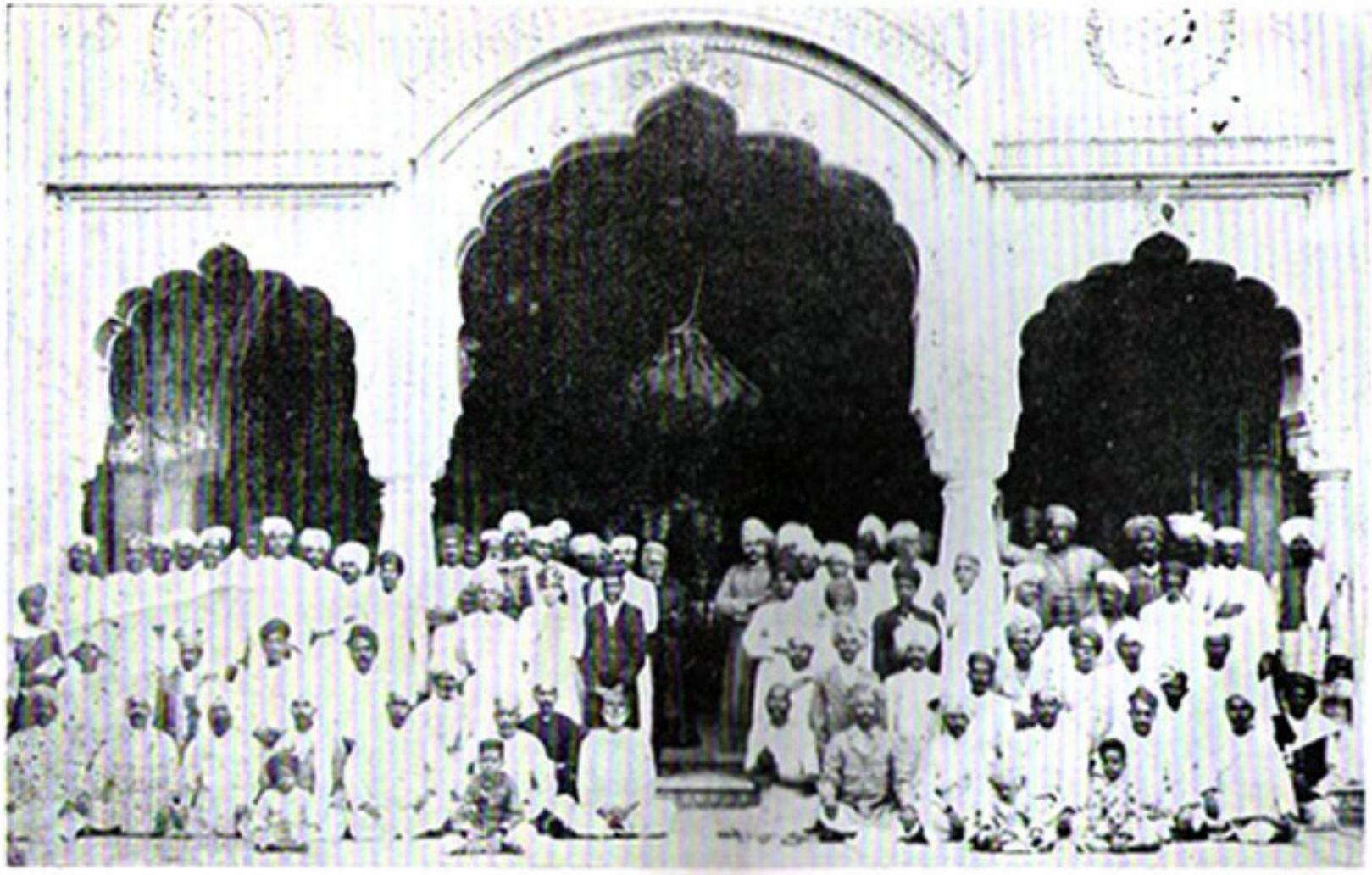

इसी सभा के सन् १९२४ वाले विशेषाधिवेशन में सर्वसम्मति से समर्थित हुए प्रस्ताव के द्वारा इस संस्था को मिडिल स्कूल से हाई स्कूल बनाने की प्रेरणा प्राप्त हुई थी ।

हाईस्कूल का प्राचीन भवन

साहरगढ़ की सड़क पर स्थित यह भवन भी श्री तिवाड़ी बन्धुओं द्वारा ही संस्था को प्रदान किया गया है। इसमें ता० ६ मार्च, सन् १९३६ तक यह विद्यालय चलता रहा। आजकल इसमें मिडिल कक्षा तक के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। अब इसी भवन में पुनः हाईस्कूल की कक्षाओं के सञ्चालन के लिए नये कक्ष बनवाये जा रहे हैं।

नये भवन का शिलान्यास

तत्कालीन जयपुर-राज्य के अर्थ-मन्त्री पण्डित अमरनाथजी अटल एम. ए. ता० १२ जून, सन् १९३५ को बनीपार्क में कालेज के नये भवन का अटल शिलान्यास कर रहे हैं। समारोह में श्री तिवाड़ी गोविन्दनारायणजी के साथ तत्कालीन शिक्षामन्त्री श्री नरेन्द्रसिंहजी एवं गृहमन्त्री श्री हरिसिंहजी भी उपस्थित हैं।

नये भवन का उद्घाटन

जयपुर राज्य-मही-महेन्द्र श्री महाराजा सवाई मानसिंहजी ता० १० मार्च १९३८ को बनीपार्क-स्थित कालेज के नये भवन का अपने करकमलों से उद्घाटन कर रहे हैं।

कॉलेज का नया भवन

सन् १९३९ में

इस भवन के लिए जयपुर राज्य से बनीपार्क में प्राप्त ४५० × ६२३ वर्ग भूमि में श्री तिवाड़ी-परिवार ने अनुमानतः दो लाख रुपये व्यय करके यह भव्य भवन बनवाया है। नियमानुसार राज्य से भी चालीस हजार रुपये इस भवन के निर्माण में प्राप्त हुए हैं।

विद्यालय-क्षेत्र में

श्री श्रीनाथ प्रभु का सुन्दर मन्दिर

विद्यालय-भवन के निर्माण के साथ ही इस सुन्दर मन्दिर का भी निर्माण हुआ है।

टीचर्स क्लब

टेनिस क्लब के साथ बने हुए इस भवन में आजकल कुछ विद्यार्थी भी रहते है।

पारितोषिक वितरण

सन् १९४५

जयपुर-राज्य-पुरन्दर महाराजा श्री सवाई मानसिंहजी महोदय कालेज-भवन में पारितोषिक-वितरण-महोत्सव के सभापत्य पद को सुशोभित कर रहे हैं। आपके साथ तत्कालीन जयपुर राज्य के प्रधान मन्त्री सर मिर्जा इस्माइल आदि सामन्तवर्ग भी उपस्थित है।

हिज हाईनेस दी चीफ स्काउट्स फ्लैग
के
विजेता हमारे वीर वालचर

तृतीय जयपुरस्टेट-प्रतियोगिता कैम्प
सन् १९४०

इस कैम्प में १६ स्काउट और एक स्का० मा० श्री नवलकिशोर काछुर ने भाग लिया था ।

चतुर्थ जयपुरस्टेट-प्रतियोगिता कैम्प
सन् १९४५

इस कैम्प में ३२ स्काउट और एक स्का० मा० श्री नवलकिशोर कांकर ने भाग लिया था ।

अध्यापकों के साथ इन्टर कक्षा के सर्वप्रथम विद्यार्थी, सन् १९४७

अखिल भारतवर्षीय इतिहास-अनुसन्धान-आयोग

सन् १९४७–४८

कालेज-क्षेत्र में पारीक ग्रेजूएट सम्मेलन

सन् १९४२-४३

संस्थापक–समारोह में राजस्थान के तत्कालीन प्रधान मन्त्री

श्री टीकाराम पालीवाल

सर्वाधिक ट्राफियों के विजेता हमारे बालचर

सन् १९५४

इस कैंप में आठ स्काउट् और श्री नवलकिशोर कांकर 'डिस्ट्रिक्ट स्काउटमास्टर' ने भाग लिया था। राजस्थान–जयपुर–डिवीजन के सन् १९५४ वाले प्रतियोगिता कैंप में निरीक्षण, अनुमान और अज्ञात टैस्ट की प्रतियोगिताओं में सर्वप्रथम रहने के कारण इनको तीन ट्राफियां विजय में प्राप्त हुई है और कैंप भर में इनका तृतीय स्थान रहा है। इससे पूर्व चतुर्थ जयपुर स्टेट प्रतियोगिता कैंप में यहाँ के स्काउटों ने ट्रु परिकार्ड, तथा मार्चिंग की ट्राफियां प्राप्त की थीं एवं पंचम जयपुर स्टेट प्रतियोगिता कैंप में भी ये अज्ञात टैस्ट की ट्राफी से पुरस्कृत हुए थे। जयपुर–डिवीजनल कैंप में भी यहाँ के वीर बालचरों ने फर्स्टएड, ऑबजर्वेसन, स्टूरिंग ऐंड ट्रेकिंग, कैंप ऐंड लॉ और जनरल प्रावीसेंनी की प्रतियोगिताओं में प्राथमिकता प्राप्त की है।

कालेज भवन में डिग्री-कक्षाओं के लिए नये कक्षों का निर्माण

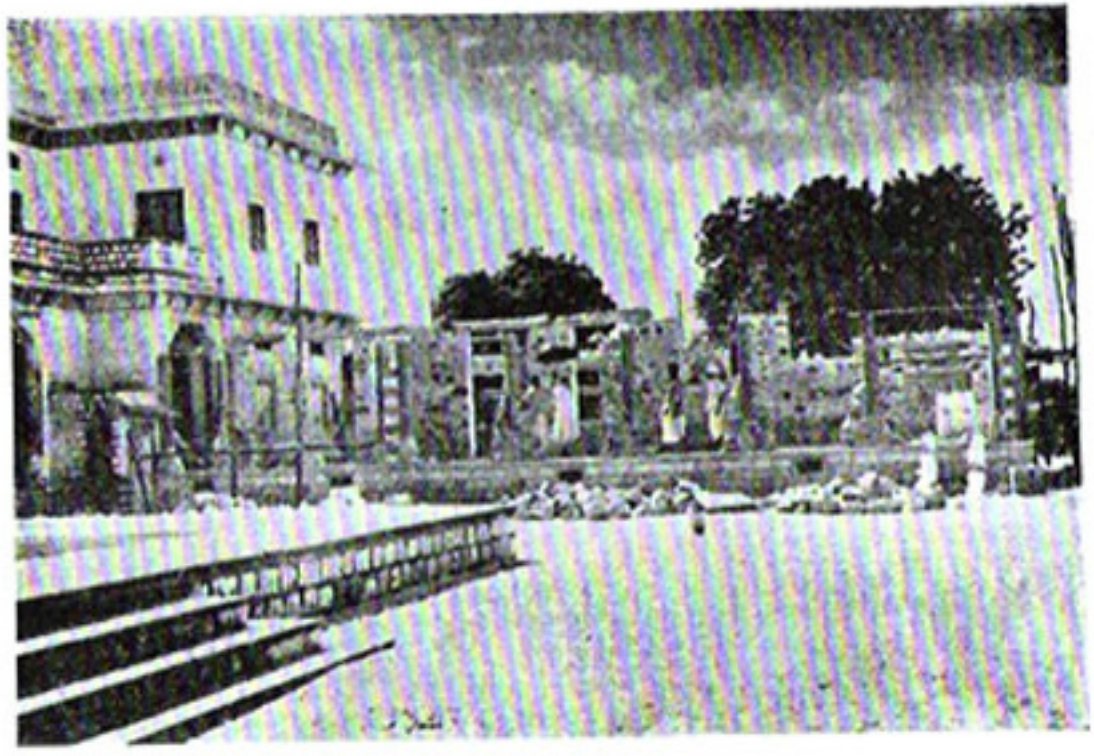

कालेज के पृष्ठभाग में दक्षिण की तरफ का यह दृश्य है। उत्तर की ओर नये कक्ष बनकर तैयार हो चुके हैं।

श्री तिवाडोजी साहब द्वारा

कक्ष-निर्माण-निरीक्षण

कालेज के उपरिभाग में

बने हुये नये कक्ष

कालेज-भवन का अग्रभाग

कालेज का वर्त्तमान परिवर्धित नया भवन

इस भवन के निर्माण में अब तक राजकीय सहायता के अतिरिक्त करीब तीन लाख रुपये और अधिक व्यय हो चुके हैं, जिसका अशेष भार श्री तिवाड़ी-परिवार ने ही वहन किया है ।

कालेज के आचार्य के अन्तःकक्ष का एक दृश्य

हमारे वर्त्तमान शिक्षा-शास्त्री

दैनिक प्रार्थना

नियमित व्यायाम

हमारे कुछ उत्साही सैनिक विद्यार्थी

ए० सी० सी०

१९५५-५६

एन० सी० सी०

१९५५-५६

इन केडेट्स ने खैरवाड़ा स्थित वार्षिक शिविर में उच्च सैनिक शिक्षा प्राप्त की है। इन्होंने सांडेराव-समाज-सेवा-शिविर में राजस्थान के अन्य केडेट्स के साथ एक मील लम्बी नहर खोदकर द्वितीय पञ्चवर्षीय योजना में भी भारत सरकार का हाथ बटाया है।

देशसेवा के लिए तत्पर हमारे स्वयंसेवक

रोवर्स
१९५५-५६

स्काउट्स
१९५५-५६

हमारे यहां के रोवर्स देश-सेवा के प्रमुख अवसरों पर सदा सम्मिलित होते रहते हैं । प्रयाग के कुंभ मेले में भी इन्होंने सराहनीय सेवा की है । चित्र में प्रिंसिपल श्री गोपाललालजी एम.ए. (संरक्षक) एवं श्री भोलारामजी डि० रो० मी० भी उपस्थित हैं ।

स्काउट्स अपनी पेट्रोल-मीटिंग में गांठें आदि का अभ्यास कर रहे हैं ।

वीर शेरवच्चे

१९५५-५६

इन वीर शेरवच्चों ने प्रतियोगिता-कैंप में सम्मिलित होकर प्राथमिक चिकित्सा का प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है ।

तुलसीजयन्ती के अवसर पर

स्वामी विमोचानन्दजी

ब्रांच स्कूल की नूतन बालकक्षा

के कुछ छात्र

कालेज की विद्यार्थी सभा १९५६–५७

सम्मिलित सदस्य

बाईं ओर से कुर्सीपर – आर० सी० जौहरी, एम० सी० चौहान, एन.एल. शर्मा, श्री बी.एल. पुरोहित प्रिंसीपल, श्री एम०एम० लवानिया, आर. एन. गुप्ता, एच० एम० पारीक । खड़े हुए – सीताराम, प्रतापकुमार, आर. बी. सिंह, बी० एम० शर्मा, के० पी० भटनागर, पी० पी० खन्ना, आर. सिंह, एम. एम. गुप्ता, पीछे खड़े— पी.पी. खन्ना, आर० सी० मित्तल ।

कार्यकारिणी के सदस्य

बाईं ओर से कुर्सी पर—आर०सी० जौहरी, एम० सी० चौहान (उपसभापति) एन० एल० शर्मा (सभापति) श्री बी० एल० पुरोहित (संरक्षक), श्री एम० एम० लवानिया, (निर्देशक), आर० एन० गुप्ता (मन्त्री) एच० एम० पारीक (कोषाध्यक्ष) खड़े हुए—एस. एम. गुप्ता, रघुवीरसिंह राठावत, आर० सी० मित्तल, पी० पी० खन्ना ।

हमारे क्रीडा-विभाग के प्रधान नायक

कालेज विभाग
१९५६-५७

बाँई ओर से खड़े हुए—एस. एन. शर्मा, बी. के. पारीक, आर. सिंह। बैठे हुए—एम. पुनशी, श्री एम. एम. नवानिया एम. ए., श्री जी. एल. पुरोहित एम.ए. प्रिंसीपल, सुरेन्द्रसिंह, एम. सिंह।

हाईस्कूल विभाग
१९५६-५७

बाँई ओर से खड़े हुए—आर. एन. कक्कड़, भीखाराम, ब्रजनन्दन। बैठे हुए—डी. पी. तिवाड़ी, श्री एस. बी. पारीक बी.ए., श्री जी.एल. पुरोहित (प्रिंसीपल) श्री एम. एम. नवानिया, एन. के. पारीक।

कालेज-पत्रिका-सम्पादक

१६४६-४७

बांई ओर से—श्री सुरेशचन्द्र मिश्र च० व० कला, श्री के० एल० कमल, श्री एन० के० कांकर, श्री जी० एल० पुरोहित प्रिंसीपल, श्री के० के० पाठक, श्री भवानीशंकर शर्मा द्वि० व० वाणिज्य, श्री करणसिंह राजावत द्वि०व० कला।

मॉरल एसोसियेसन

१६४६-४७

बांई ओर से खड़े हुए—श्री सतीशचन्द्र, राधाकृष्ण, वेदप्रका
बैठे हुए—विजयकुमार (सभापति) श्री सुखदेव शर्मा
एम. ए. (निर्देशक) श्री गोपाललाल पुरोहित
एम० ए० प्रिंसीपल (संरक्षक)
रामेश्वरसिंह (मंत्री)।

इतिहास-राजनीति परिषत्

१९५६-५७

बाईं ओर से — खड़े हुए — एन० एन० गंगवानी, एन० सी० मिश्र, आर० बी० सिंह, आर० एम० पारीक, एम० एम० आरिफ, मोहम्मद ओ.के. बाई, टी.टी. माथुर, पी०एन० मिश्र । बैठे हुए — एन०के० बहल, श्री एम०एम० नवाबिया, श्री जे० एम० घोष, श्री जी० एन० पुरोहित श्री के०एन० वमन ।

अर्थशास्त्र परिषत्

१९५६-५७

बाईं ओर से खड़े हुए अमरनाथ, कुलवंतकौर, पी० एन० शर्मा, मजीतसिंह, आर० जी० विनय । बैठे हुए — आर० के० पारीक कल्याणबक्ष, गोविन्दप्रसाद (सभापति) श्री के.एन. कक्कड़, (निर्देशक) श्री जी० एन० पुरोहित प्रिंसीपल (संरक्षक) आर० पी० त्रिपाठी एम. ए. (मन्त्री) बी० पी० बांठरा ।

संस्कृत साहित्य परिषत्

१९५६-५७

बाईं ओर से खड़े हुए—रामजीलाल, गङ्गाराम, शंकरसिंह (कार्यवाहक सभापति) मदनलाल (प्र०संयोजक) जगदीशनारायण, पुरुषोत्तम, एम. एम. मिश्र, विद्याव्रत । कुर्सियों पर—रामसहाय (प्र० मन्त्री) हरिदास स्वामी (उप मं०) श्री एस०के० शंकर (निर्देशक) श्री जी०एस० पुरोहित (संरक्षक) यमुनाशंकर (सभापति) ईश्वरीप्रसाद चतुर्वेदी (मंत्री) एम० एम० पारीक नीचे बैठे—ज्योतिप्रसाद, शिवकुमार ।

हिन्दी साहित्य परिषत्

१९५६-५७

खड़े हुए बाईं ओर से—आर. के शर्मा (उप मन्त्री), के. एल. जोशी, हरिदास स्वामी, एस.सी. मिश्र, बी.एल. शर्मा (उपमन्त्री) भागीरथसिंह कुर्सी पर - पी. के. चतुर्वेदी, (मन्त्री), एम. एल. शर्मा, (सभापति) श्री बी. एल. शर्मा, श्री गोपाललाल पुरोहित (संरक्षक) श्री के.के. पाठक एम.ए. (निर्देशक) यमुनाशंकर शर्मा उपसभापति, डी. एल. मिश्र ।

इंग्लिश एसोसिएशन

बाईं ओर से खड़े हुए—पूर्णसिंह (मंत्री) जी. एन. तिवाड़ी. (संयुक्त मंत्री) डी. डी. चंद। बैठे हुए—आर.एन. गौड़ (सभापति), प्राध्यापक श्री डी. सी. दत्ता एम. ए. (निर्देशक) श्री मोहनलाल पुरोहित एम. ए. प्रिंसीपल (संरक्षक) श्री कामाख्या लाल एम. ए., रमेश खन्ना ।

वाणिज्य परिषद्

बाईं ओर से खड़े हुए—आर. एम. गुप्ता, दुलाचन्द, पी. पी. खन्ना, रामेश्वर, विश्वनाथ। बैठे हुए—श्री एन.एन. पुरोहित बी. कॉम, श्री एच. एम. पारीक, एम. कॉम, एम. ए., श्री जी. एल. पुरोहित (प्रिंसीपल), श्री डी. डी. भार्गव एम. कॉम, श्री एन.एन. माथुर बी. कॉम, बी.एल. शर्मा ।

वाणिज्य-कक्ष

तबक-कक्ष

वाचनालय का एक दृश्य

प्राध्यापकों के साथ बी०ए० के प्रथम परीक्षार्थी, सन् १९५७

बाईं ओर से कुर्सी पर—श्री एन. एल. माथुर, श्री एच. एल. पारीक, श्री एन. के. कांकर, श्री जी. डी. शर्मा, श्री के. के. पाठक, श्री जे. एम. घोष, श्री जी. एल. पुरोहित (प्रिंसीपल), श्री टी. सी. दत्ता, श्री एन. एल. मुकर्जी, श्री के. एन. कक्कड़, श्री डी. डी. भार्गव, श्री के.एल. कमल।
खड़े हुए, प्रथम पंक्ति—आई. सी. जौहरी, डी. एन. मिश्र, जे. के. सक्सेना, जयमालसिंह, एच. एस. यादव, पी. के. शर्मा।
द्वि० पंक्ति—महादेवसिंह, आर. सी. मित्तल, एम.पी. चौहान, बी. एल. पारीक, के. बी. भटनागर, एस.के.माथुर, एल. के. बहल, वीरबहादुर, पी. सी. सेठान, पी. टी. शर्मा, एल. सी. मिश्रा। बैठे हुए—पूर्णसिंह, आर. एन. बोर।

सुवर्ण-जयन्ती-समुत्सव के कुछ दृश्य

इस संस्था के पचास वर्ष की सुखद समाप्ति के सुअवसर
पर बड़े समारोह से ता० २८ नवम्बर सन् १९५६
से ता० ६ दिसम्बर, सन् १९५६ तक विभिन्न
कार्यक्रमों के साथ सुवर्ण जयन्ती
समुत्सव मनाया गया है ।

शुभाशंसा

प्राध्यापक श्री नवलकिशोर काङ्कर

इह गुण-कुसुमानां सौरभाऽऽस्वाद-मुग्धाः
पिपठिषु-शिशु-भृङ्गा मञ्जु गुञ्जत्स्वनेन,
विविध-विधि-पराणां पाठकानां निनादं
श्रवण-मधुर-पूरं वर्धयन्तां नितान्तम् ॥

प्रसन्न हुए हैं सब छात्र और शिक्षक भी
जिसकी अभूतपूर्व अपूर्वता सुहाई है,
जैपुरेन्द्र-गेहमन्त्री-प्रधानमन्त्री आदि ने
पधार के विकास की विभावना जगाई है ॥

धन्या सौभाग्यशालिन्यतनु-तनुवती सद्यशोराशिशुभ्रा
पञ्चाशद्वर्षभव्यं पदमधिकगुणं गाहमानाऽऽसमाना,
वन्द्या ह्यद्याऽनवद्या गुणगणविभवा विश्वभावानुरूपा
मातेवान्तेवसन्तं शिशुमवतु सुविद्यालय-व्यक्तिरेषा ॥

श्री गोविन्द श्री व्रजेश गोकुल गोपाल और
प्रताप के प्रताप ने विशेषता दिखाई है,
स्वर्णजयन्ती के अति शुभमय समय इस
कालेज को कोटि कोटि बधाई है बधाई है ॥

गोविन्ददेव-पद-सुन्दर-मन्दिरान्त
गोपाल-गोकुल-प्रताप-विशेषकान्त

श्रीमद्व्रजेश-पद-भक्तिरस-प्रशान्त ।
कालेज उन्नत बने सब से नितान्त ॥

श्री जयपुर-महाराज का
द्वार पर स्वागत

श्री जयपुर-महाराज का
सभा-मण्डप में प्रवेश

श्री जयपुर-महाराज
अभिभाषण पढ़ते हुए

श्री ति० गोविन्दनारायणजी
अभिभाषण पढ़ते हुए

उद्घाटन-समारोह का

सामूहिक दृश्य

स्वल्पाहार-समारोह में

श्री जयपुर-महाराज

पूर्व-छात्र-समारोह का

उद्घाटन

पूर्व-छात्र-समारोह में

रस्साकसी

पूर्व छात्र-समारोह के कुछ दृश्य

शारीरिक प्रदर्शन

बैलून दौड़

कबड्डी–क्रीड़ा

वालीबॉल मैच

छात्र-समारोह में भाषण देते हुए

श्री ति० कन्हैयालालजी एम० ए०, विशारद

श्री श्यामसुन्दरजी शर्मा एम० ए०, एल० टी०

श्री हीरालालजी शास्त्री

सेठ श्री मोहनलालजी दूगड़

छात्र-समारोह में भाषण देते हुए

श्री पूलंकुमारजी एम. ए., एल. एल. बी.

छात्र-समारोह में धन्यवाद देते हुए

श्री लि० कन्हैयालालजी एम. ए.

पारीक जातीय समारोह में अभिभाषण पढ़ते हुए

श्री लि० गोविन्दनारायणजी

पारीक जातीय समारोह में अभिभाषण पढ़ते हुए

श्री गोकुलनारायणजी व्यास, बी. ए.

पारीक जातीय समारोह में भाषण देते हुए

पू० श्री [illegible]जी 'कविरत्न'

पारीक जातीय समारोह में भाषण देते हुए

श्री ति० कन्हैयालालजी एम. ए.

वादविवाद-प्रतियोगिता में अध्यक्ष पद पर विराजित

श्री नरोत्तमलालजी, जोशी

वाद-विवाद-प्रतियोगिता के

निर्णायक विद्वान्

श्री जयपुर-महाराज का
द्वार पर स्वागत

श्री जयपुर-महाराज का
सभा-मण्डप में प्रवेश

श्री जयपुर-महाराज
अभिभाषण पढ़ते हुए

श्री ति० गोविन्दनारायणजी
अभिभाषण पढ़ते हुए

उद्घाटन-समारोह का

सामूहिक दृश्य

स्वल्पाहार-समारोह में

श्री जयपुर-महाराज

पूर्व-छात्र-समारोह का

उद्घाटन

पूर्व-छात्र-समारोह में

रस्साकसी

पूर्व छात्र-समारोह के कुछ दृश्य

शारीरिक प्रदर्शन

बैलून दौड़

कबड्डी–क्रीड़ा

वालीबॉल मैच

छात्र-समारोह में भाषण देते हुए

श्री ति० कन्हैयालालजी एम० ए०, विशारद

श्री श्यामसुन्दरजी शर्मा एम० ए०, एल० टी०

श्री हीरालालजी शास्त्री

सेठ श्री मोहनलालजी दूगड़